षडंग यात्रा (प्राचीन लिंगपुराण)

अविमुक्तं च स्वर्लीनमोङ्कारं चण्डीश्वरम।
मध्यमं कृत्तिवासं च षडङ्गमीश्वरं स्मृतम्।। १०

इस यात्रा में अविमुक्तेश्वर, स्वर्लीनेश्वर, ओंकारेश्वर, चण्डेश्वर, मध्यमेश्वर तथा कृत्तिवासेश्वर के दर्शन-पूजन का क्रम है। अन्य पुराणों के अनुसार दो अन्य योग भी षडंग कहलाते हैंः

विश्वेश्वरो विशालाक्षी द्युनदी कालभैरवः।
श्रीमाण्ढुण्ढिर्दपाणिः षडङ्गो योग उच्यते।।

तथा

ओंङ्कारः कृत्तिवासश्च केदारश्च त्रिविष्टपः।
वीरेश्वरोऽथ विश्वेशः षडङ्गोऽयमिहापरः।। ११

इसके अनुसार विश्वेश्वर, विशालाक्षी, गौरी (मीराघाट), गंगाजी, कालभैरव दण्डपाणि तथा ढुण्ढिराज का अर्चन-पूजन भी षडंग यात्रा होती है। और इसी प्रकार, ओंकारेश्वर, कृत्तिवासेश्वर, केदारेश्वर, त्रिलोचन (त्रिलोचन मुहल्ले में), आत्मावीरेश्वर (संकटाजी के पास) तथा विश्वेश्वर का दर्शन-पूजन भी षडंग यात्रा कहलाती है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.